विद्वान विशेषांक

ऋषि प्रसाद

संत-महापुरुषों की जयंती मनाने का उद्देश्य
पूज्य वापूजी का अवतरण दिवस : १३ अप्रैल

भगवान बड़े कि भगवान का नाम बढ़ा ?
पाठ पृष्ठ १२

श्रीराम वल्मीकी
श्री हृदयानाथ जयंती
२ अप्रैल
८ अप्रैल

प्यारे विद्वान ! हलके संग व आदरों का त्याग,
सत्सागत्रियों का अध्ययन, सर्वसंग-श्रवण, सार्वजनिक
मंत्रित्व व ध्यान - ये युद्धशक्ति और सत्याग्रह विकास
cे लिए अर्जकं उपयोगी हैं। तुम्हारे जीवन में भी, यह करौं।
निराकार मोही, आशावादी वन, उत्साही वन,
बिद्वान-बाधाओं के सिर पर पौर सुकूर आगे बढ़ियी चला
जातो सफलता तरी काम ही जानेगी। - पूज्य वापूजी

पिछले ५६ वर्षों से पूज्य वापूजी के प्रेरक महादर्शन से देश के भावी कर्मियों और राहें हैं उन्नत जीवन के संरक्षण

‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ की सुवास तक महक रहे हैं लाखों परिवार
अनेकानेक महानुभाव कर रहे हैं मूर्ति-मूर्ति प्रशंसा

कोरोनावायरस के कहर पर विशेष तेज तेज पढ़ें पृष्ठ १ पर
एकादशी प्रति वर्षों ? २३
पूर्व प्रधानमंत्री
भारतरत्न श्री
अटल बिहारी
वाजपेयीजी
के
गद्दाद हदय से
निकले ये उद्गार ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ के
सफल विश्ववायी आयोजन की सम्पन्नता के
अवसर पर अत्यंत समर्पणीय हैं:

देशभर की परिक्रमा करते हुए जन-जन के
मन में अच्छे संस्कार जगाना, यह एक ऐसा परम
राष्ट्रीय कर्तव्य है जिसने हमारे देश को आज तक
जीवित रखा है और इसके बल पर हम उन्मूलन
प्रविष्टि का सपना देख रहे हैं... उस सपने को
साक्षर करने की राहत-धक्का एकत्र कर रहे हैं।

पूज्य वापूजी सारे देश में भ्रमण करके जगारण
का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं। हमारी
जो प्राचीन धरोहर श्री और जिसे हम लगभग
भूलने का पाप कर बेटे थे, वापूजी हमारी आँखों
में ज्ञान का अंजना लगाकर उसको फिर से हमारे
सामने रख रहे हैं। बापूजी का प्रवरण सुनकर
वड़ा बल मिला है। जीवन के व्यापार में से थोड़ा
समय निकालकर सतंबर में आना चाहिए।

14 फरवरी को अहमदाबाद में मातृ-पितृ पूजन
कार्यक्रम के आयोजन पर
महिला उत्सव मंडल व उनके सभी कार्यकर्ताओं
तथा पूजन करनेवाले बालकंठों का अभिनंदन।

- श्री धरन्दर ठाकरे, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र
इस विद्याविशेषांक में...

- मातृ-पितृ पूजन दिवस का हुआ चढ़ाहूंद अनुमोदन 2
- बुलाना श्रेष्ठ बन प्रायोगिक 4
- ध्यान-ज्ञान के अध्यापन से हुआ निर्णय, खुले परम जीत के बार 5
- कोरोना क्रांति पर विशेष : विपदा से पहले लीड अपनी जोड़ी की ओर 7
- परिप्रेक्ता भवन बढ़े कि भवन का नाम बदले 9
- संयंत्र महापुरुषों की जयंती मनाने का उद्देश्य 9
- काव्य पृथ्वी वन द्रौपद तम तह प - साहित्य 13
- पृथ्वी पापुजी के जीवन-प्रसंग 14
- आपकी हर चेतना सजह, विद्विज्ञ, रहस्यमय और कलाप्राकाश है 14
- सबकी पुत्रक रुपाले, जग, सत्संग व ईश्वर में प्रीति बढ़ते 14
- चन्द्र-देवता-सेवा कर्त्तव्याधिन और निर्भय बनने के बार महापुरुष सोपन 17
- विद्याविशेषांक और आज खेले आत्मस्वीकार देववाला खेल 18
- अपने जीवन को विद्याको ओर ले चलो 18
- पदार्थ के तारा-साधन सेवा-साधन का भी लाख उठाए - आश्रेय 18
- तेजस्वी युगा सबत के खबर खबर था खाली खाली... 20
- महिला उत्थान ...शिक्षा के लाभार्थियों के हाथान्तरण 21
- तल दर्पण 21 पंचमाहायुद्ध के भरुलकों की रचना व उनके कार्य 22
- हरिचंद्र माधवराम एकदम ब्रह्म? 23
- भैया! तू खोजेगाले अपने को खोज! 24
- संगीत नितिनी अनुभव-वाणी 26
- बालक-बालिकाओं को भी उन्नत बनाना ध्यान - स्वामी मुकुटांतर 27
- संस्था समाचार ...विश्वभर में वहें उठाए से मनाया गया... 28
- छाया रहा मातृ-पितृ पूजन दिवस 29
- रवारध्य अभ्यास 29 विद्याविशेषांक के उत्तर रवारध्य तथा 30
- बुड़ी, तुलिया व स्रुतिपरंपरा बदलांते हैं 30
- स्मृति-बुद्धिमत्त, विविध स्वास्थ्य-समस्याओं में लाभार्थी उपदान 30
- आयु, बुड़ी, कालित व वाक्शिकता वर्धक सराय साधना निगटि 30
- वसंत वाण में लाभार्थी कला शास्त्रिक उपरान्त की धारी 31
- ऐसी साहित्य बन सकती है ग्रंथज्ञ ब्रह्मज्ञात्व का कारण 31
- भवनों के बाहुल्य* ...तुम्हारे दिनों में आध्यात्मिक पावन - जीवन 32
- अन्नमल उत्तमियाँ तथा विद्या प्रदायक मंत्र 33
- बच्चों की समस्याओं के पलाश है व्यवस्था! 34
- परीक्षण... 34

विद्याविशेषांक पर पृथ्वी पापुजी के सातांग रोइकार्य

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.
ध्यान-जप के अभ्यास से हुआ निर्भय
खुले परम जीत के बार

महात्मा बुद्ध के ज्ञानी की बात है। दो वच्चे आपस में खेलते थे। एक वच्चा सदैव जीतता था और दूसरा सदैव हारता था। एक दिन हसरनेवाले ने जीतनेवाले से पूछा कि “तू अच्छी व्यवहार करते हो कि जो जीत जाते हो?”

जीतनेवाले ने कहा : “‘मैं रोज भगवान, सदृशु की शरण जाता हूँ, ध्यान करता हूँ। ‘बुद्ध’ शरणं गच्छामि... गुरुं शरणं गच्छामि... सत्यं शरणं गच्छामि...’ ऐसा बोलते-बोलते में शांत हो जाता हूँ, फिर मुझे पता नहीं क्या होता है। बाद में मेरे में बड़ी स्फूर्ति होती है, शक्ति होती है।”

गुरुमंत्र जपे अथवा कीर्तन करने, ध्यान करने विषयक अनुभव में ही व्यक्ति जितने अंश में उस आत्मा-परमात्मा में स्थित होता है, शांत होता है, उसने ही उसकी योग्यता विकसित होती है। अगर देख को मेरी मानना तो संसार और विद्याओं का आकर्षण होगा लेकिन आत्मा को मेरे के भगवान को, सदृशु को ‘मेरा’ मानना तो विकार कर होगे और आत्मसुख आयेगा।

वह लड़का अनजाने में आत्मसुख, आत्मशांति का प्रसाद लेता था। हसरनेवाला लड़का था भोला-भाला, साफ-हुदया। उसने सफलता की कुंजी क्या है समझा तो और प्रतिदिन ध्यान करने लगा। एकदा हिम्मत बढ़ जाती है। वह कभी-कभार जीतने लगा तो उसकी ध्यान में, जप में और श्रद्धा हो गयी। वह और करने लगा। अब देख के साथ चल जाने पर वह जीतने लगा गया। लेकिन उसके साथ-साथ उसके जो अंतरंग सुख मिलने लगा उसके आगे उसकी जीत और धर सब खिलवाड़ हो गये। अब खेल में उसे इतना आनंद, रस नहीं आता था, इतना महत्त्व नहीं दिखता था क्योंकि वह अंतरंग साधना में चला गया था। अब तो उसको शांत बैठे रहने में, जप करने में, मौन रहने में रस आने लगा गया। ऐसा करते-करते उसकी मन-शक्ति, निर्णयशक्ति, निर्भरता आदि गुण खिल गये। उसकी मति-गति कुछ अनूठी होने लगी।

एक बार वह अपने पिता के साथ खेल में गया। खेल के आसपास के पेड़-बेड ढोंढ़े बढ़ गये थे, उनकी डालियों-वालियों काट-कूट के बैलगाड़ी भरी। देख हो गया, चुरुं डूंढने लगा। दोनों चल पड़े। दिनभर में न तो बीच में धकाए हुई।

बैलगाड़ी रोकी, बैलों को खोला। रुचा, ‘जरा आराम करे, बैल भी जरा चर लें।’ बैल चरने के बहाने खिसक गये और गाँव में पहुँच गये।

जब बाप की नींद खुली तो उसने बेटे को कहा कि “देख, हम लोगों को जरा बोका आ गया तो इतने में बैल भाग गये। तुम यहाँ बैठो, मैं बैलों को खोज के लाता हूँ। डर नहीं।”

बाप पहले एकदम चुप-से जतू से भी डरता था लेकिन अब पास में ही गाँव का मस्तिष्क है फिर भी वह लड़का बोलता है कि “मैं नहीं डरता। पिताजी! आप बैलों को खोजने जाइये।”

बाप बैलों के पदचिन्हों को खोजते-खोजते गाँव में पहुँच गया। बैल तो मिले, घर पर पहुँच गये थे, अब बैलों को बापस लाकर बैलगाड़ी खोचने के लिए गाँव से जोड़ना था लेकिन गाँव का देवाजा बंद हो गया। बाप गाँव में और बैटा बाहर जंगल में और अमीराने के पास। बैटा बैठ गया, उसको बड़ी चरका था – गुरुं शरणं गच्छामि... शुद्ध-बुद्ध
गुरु को देह मानेंगे तो आप देह से परे नहीं जायेंगे।

संत-महापुरुषों की जयंती मनाने का उद्देश्य - पूज्य बापूजी

(पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस : 13 अप्रैल)

मेरा जन्मदिवस-उत्सव आप मनाते हैं लेकिन यह समझना भी आवश्यक है कि मेरा और आपका अनादि काल से कई बार जन्म हुआ है।

भगवान अपने प्रिय अर्जुन को कहते हैं:

बहुने मे व्यक्तित्विन जननानि तव चारुन।
तायण्यं वेद सर्वं ग्न लं वेत्ति परस्त्रय॥

‘हे परस्त्र अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत-से जन्म हो चुके हैं। उन सबको तु नहीं जानता किंतु मैं जानता हूँ।’

(गीता : ३.५)

जीव क्यों नहीं जानता है? क्योंकि जीव नकार वस्तुओं का संग्रह करने और उनसे सुख लेने के लिए वह धीरता करता है उससे उसकी मति व वृत् 
स्थूल हो गयी है। इसलिए वह अपने जन्मों को नहीं जानता है और ईश्वर अपने अवतारों को जानते हैं क्योंकि ईश्वर में विषय-विलास से सुख लेने की 
मति व वृत्त नहीं है। ईश्वर को अपने आत्मरूप का भान रहता है। ‘जो जन्मता है, बढ़ता है, बुद्धा 
होता है और मर जाता है वह मेरा शरीर है।’ - ऐसा 
जिन सत्पुरुषों को अनुभव होता है वे भी अपने 
शरीर के जन्म को एक निमित्तमात्र बनाते हैं, अपने 
वास्तविक स्वरूप को जानते हैं। ऐसे पुरुष भगवान 
के उस रहस्य को समझकर अपने अखंड स्वभाव 
में जगे रहते हैं।

जयंतियाँ क्यों मनायी जाती हैं?

ब्रह्म, उपवास कत-मन के शोधन के लिए किये 
जाते हैं। पर्व और उत्सव अपनी सूक्ष्म क्षणताओं के 
आदेश आनंदावे विभिन्न-वाधाओं को, हताशा- 
विषयाओं को दूर बनाए और अपनी दिशात्मक 
संबंध को पाने के लिए मनाये जाते हैं। जयंतियाँ 
मनाने के पीछे यह उद्देश्य है कि इनके द्वारा वांछनीय 
उपमा, भावनाओं, आत्मविश्वास व जनन ज्ञान का 
प्रचार-प्रसार हो, वांछनीय दृष्टि उपस्थित हो और 
वांछनीय आदर्शों, मांग निकालने की हिम्मत बढ़ 
जाय तथा वांछनीय दृष्टि बदल जाया। जिस प्रकार 
भगवान श्रीरामजी की, भगवान श्रीकृष्ण की, महादेव 
बुद्ध की, गुरु नानकजी की, साँई लीलाशाहजी की या 
चाहे किसी सत्पुरुष की जयंति मनाये।

जो शुद्ध-वृद्ध, निरंजन-निराकार परमात्मा है 
उसको अवतरित करने के लिए वातावरण बनाना 
पड़ता है। हजारों-हजारों दिन जब शुपकमना 
करते हैं और मार्गदर्शन चाहते हैं तब वह 
साध्विचारांन्द जिस अंतःकरण में विशेष रूप से 
अवतरित होता है उसे अवतार कहते हैं। बाकी 
तो 
परमात्मा राम बनकर आये, कृष्ण बन के आये 
तो 
श्रीकृष्ण बनता या पाठक कन बन के भी वह 
परमात्मा बैठता 
यह बात भी उसी ही सच्ची है।

कीड़ी में लालो बन बेटो हाथी में तू मोटो क्यूँ? 
बन महावत ने मायें बेटो हांकणवालो तू को तू!...

अनादि काल से सुष्टित चली आ रही है, राम थे 
वह भी तुम थे, कृष्ण थे तब भी तुम थे, सुष्टि के 
आदि में तुम थे, नम भी तुम थे, अब भी तुम हो 
और प्रतल हो जायेगा तब भी तुहारा नाश नहीं 
होता है, वास्तव में तुम वह पवित्र-परमात्मा का 
अनुपालन स्वरूप हो। इस समझ को उभारने का 
अवसर मिले, इसका अनुभव करने का साधन 
मिले इसलिए जयंतियाँ मनायी जाती है।
एक बालक अकेला-अकेला रहता था। एक बार उसके मित्र पूछा: ‘मित्र! तुम अकेले क्यों रहते हो? हमारे जैसा खेल खेलना तुम्हें क्यों पसंद नहीं है?’

उस बालक ने कहा: ‘ऐसा कुछ नहीं है। चलो, मैं आप सबको एक नया खेल सिखाऊँँगा, जिसका आनंद कुछ निराला ही है। तुम सब तैयार हो?’

सभीने उत्साहपूर्वक कहा: ‘हाँ-हाँ, बताओ तो सही!’

‘हर रोज हम सबको जो जेबकर्च के ठोंडे पैसे मिलते हैं, उसमें से सप्ताह में एक दिन के जेबकर्च के पैसे बचाया। उन्हीं पैसों से आटा खरीदते और बिन्दियाँ बना के अंगों, गर्मियों को इंश्वरीय भाव से भोजन कराते।’

सबको यह बताया जा ची था वैसे ही किया। ‘दीनवंधु! दीनानाथ!! मेरी जीवन की डोरी तेरे हाथ।’ भोजन गाते-गाते बच्चे भोजन बॉटे लगे। भोजन मिलते ही गर्मियों के चेहरों पर खुशी छा गयी और उनकी भूख की तृप्ति होने के साथ-साथ बच्चों के हृदय में इंश्वरीय आनंद का झरना फूटने लगा।

सभीने कहा: ‘मित्र! आपस में खेल खेलने से मजा तो आता है लेकिन इस प्रकार का मजा, आनंद तो कुछ और ही है। बहुत अद्भुत है! हम मान गये कि दीन-दुःखियों की सेवा करना भी इंश्वर की महान पूजा है।’

दरिद्राधिकारियों की सेवा हेतु मित्रों को प्रेरित करने के लिए नीतिहाल आगे चलकर अपने सदस्यों के कुपा-प्रताद से ‘साधु वासवानी’ नाम से प्रसिद्ध संत हुए।

जिनके जीवन में बचपन से ही परतु:खातात्त, परोपकार, उद्योगिता, उपयोगिता, सहयोगिता आदि सदुमान होते हैं ऐसे बच्चे बड़े होकर महानता की ऊँचाइयों को छूते हैं।

प्राणवन पंक्तियाँ

कहा हिमालय बता रहा है
डरो न आधी पानी में,
खड़े रहो अपने पथ पर कठिनाई तुरकानी में न thing न अपने प्रण से ठोँक न के पसंद हो
सब कुछ पा सकते हो प्यारे!
तुम भी ऊँचे हो सकते हो
छू सकते नभ के तरार आने अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में, मिली सफलता जग में उसको
लोगो में मर जाने में !

www.rishiprasad.org
‘चलें स्व की ओर…’ शिविर के लाभान्वितों के हद्दयोद्गार

27 दिसम्बर से 2 जनवरी तक संत श्री आशारामजी महिला उद्धार आश्रम (सती अहसूया आश्रम), अहमदाबाद में महिला उद्धार मंडल द्वारा आयोजित 7 दिवसीय जप-अनुष्ठान शिविर का देशभर से बड़ी संख्या में आयीं युवतियों एवं महिलाओं ने लाभ उठाया। प्रस्तुत हैं कुछ शिविराधिकारियों के उद्देश्य:

भावना नहाला, अधिवक्ता, नसीरावाद (राज.) : 1 जनवरी को मैं यह साल दोस्तों के साथ पार्टी में जाती थी। मुझे जानकारी मिली कि ‘अहमदाबाद आश्रम’ में 7 दिन का शिविर है’ तो मैं शिविर में आयी और मुझे इतना अच्छा लगा कि पार्टी में जाना तो दूर की बात, आश्रम से बाहर जाने का भी मन नहीं हुआ। सिविर पूरा होने के बाद भी 15 दिन और सेवा-साधना करने के लिए रुक गयी। यहाँ आने से ही मन को शांति मिलने लगती है।

दक्षा मोर, सॉफ्टवेयर इंजीनियर, बेंगलुरु : आश्रमसंबंधी जो भी नकारात्मक नृयूज चैनलों में आता है वह सब बकवास है, कुछ भी सत्य नहीं है। पुरा विश्व में बापूजी के अनुयायी हैं, वे बेवकूफ़ नहीं हैं। उनका कुछ मिल रहा है तभी तो वे बापूजी से जुड़े हुए हैं। आप उनके अनुमान सुनूँ, आश्रम में आये और सच्चाई को जाने। आश्रम जैसा पवित्र, सांतिक वातावरण कहीं नहीं मिल सकता।

संविता साली, सेवानिवृत्त प्रधानान्यायाएं वर्तमान में आगरा गुरुकुल में सेवारत : हमारा सौभाग्य है कि हमारी भालाई, उद्धार व जीवन को निखारने के लिए समय-समय पर जप-अनुष्ठान शिविर तथा अन्य कई देवी गतिविधियों का संचालन पूज्य बापूजी की कुप्रा से आश्रम द्वारा किया जाता है।

मैं गाजियाबाद गुरुकुल में सेवा करने के लिए गयी थी। वहाँ एक बच्चे के माता-पिता की वेशभूमि मुसलमान की लागी। मेरे पूछते पर उन्होंने बताया कि ‘हम मुसलमान हैं लेकिन यहाँ जो शिक्षा दी जाती है वह साबित है, सदाचार सहित है तथा नेक इंसान बनने की हिंदी देनेवाली है। इसलिए हम यहाँ अपने बेटे को पढ़ाते हैं।’

गाजियाबाद गुरुकुल में मुसलमान बच्चे भी पढ़ते हैं। उनके माता-पिता गुरुकुल में मिलनेवाले संस्कारों से बहुत प्रसन्न हैं। वे कहते हैं कि ‘जब से हमारे बच्चे यहाँ पढ़ने लगे हैं तब से ये घर में हमारा पूरा सम्मान करते हैं।’

सम्पूर्ण सिन्धु, सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर, लोबल एम.एन.सी., गुड़गाँव : मैं हर पुरी हर त्यौहार के दिन आश्रम जाती हूँ। हाल ही में ऑफिस के एक व्यक्तित्व ने मुझसे पूछा कि ‘मैं इंडिया में बापूजी से आश्रम के बारे में इतनी सारी बातें आ रही हैं तो क्या आश्रम सुरक्षित जाह्न है?’

मेरे कहा : ‘मेरे गुरुदेव का आश्रम सबसे प्यारा, सबसे न्यूआर और सबसे सुरक्षित जगह है। मेरे देश-विदेश में घूम सिया पर अगर संसार में कहीं स्वर्ग है तो वह गुरुजी का द्वार है।’

मेरी कम्पनी में बड़े-बड़े डिजिजवाले काम करते हैं और मेरे सिर्फ बी.टेक, किया है। गुरुकुला बिना यह सम्भव नहीं था कि बी.टेक.वाले को ऐसा जांच मिले। मेरा पिक्चर देखने जाना, होटल में खाना, विदेशों में घूमना - सब छू गया क्योंकि बापूजी के शेष पृष्ठ 22 पर
विश्वभर में बड़े उत्साह से मनाया गया ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’

पिछले 14 वर्षों से बाल-युवा पीढ़ी को सही दिशा देने तथा जन-जन के जीवन में संयम, सदाचार, निर्दोष पवित्र प्रेम का संचार कर रहे ‘मातृ-पितृ, पूजन दिवस’ का इस वर्ष और भी व्यापक रूप देखने को मिला।

उत्पादण के बाद से ही अपने-अपने गाँवों, शहरों के विद्यालयों-महाविद्यालयों, सोसाइटियों-कॉलेजों में प्रारंभ हुआ मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम आयोजित करने का साधन का अभियान 14 फरवरी के बाद भी चलता रहा।

गली-कूचों तक मातृ-पितृ पूजन का संदेश पहुँचाने हेतु कीर्तिन यात्राएँ निकाली गईं। 14 फरवरी से पहले ही चहुँ ओर मातृ-पितृ पूजन दिवस की गूँज सुनाई देने लगी।

14 फरवरी को देश-विदेश के संत श्री आशारामजी आश्रमों व गुरुस्थाओं में हुए कार्यक्रमों के अलावा भी जयपुर, जयपुर भवन कार्यक्रम हुए। न तो सभी भारत में बल्कि अमेरिका, कनाडा, यू ए ई, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, नेपाल आदि विश्व के लगभग 200 देशों में यह पवित्र प्रेम-दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया।

‘बच्चे-बच्चियाँ, माता-पिता – सभी को निर्दोष, पवित्र प्रेम, ईश्वरीय आनंद मिले’ – यह पूज्य बापूजी का संकल्प इन कार्यक्रमों में साकार होता देखने को मिला। करीब 1000 माता-पिताओं एवं बच्चों के गद्दाद हृदय और आँखें से बहने प्रेमशुद्धियाँँ दर्शकों के हृदय को भी पांवन कर रही थीं।

सभी जाति-वर्गों, धर्मों, मत-पंथ-सम्प्रदायों के लोगों, गणमान्यों एवं सुप्रसिद्ध भक्तियाँ ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया और हृदयपूर्वक इस अभियान का स्वागत किया गया। सभीके हृदय से एक ही भाव छलक रहा था कि ‘प्राणिमात्र के हितलिखी पूज्य बापूजी की इस विश्वकल्याणकारी पहल के लिए उनके प्रति जितनी कृतज्ञता व्यक्त की जाय उतनी कम है।’

वैदिक संस्कृति के पुनर्जीवन के इस भगवान कार्य की अनेक राजनीतिकों, गणमान्यों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। (पढ़ें इस अंक व लोक कल्याण सेटू, फरवरी 2020 के आवरण पृष्ठ 2)

युवा सेवा संघ, महिला उत्सव मंडल एवं श्री योग वेदांत सेवा समितियों द्वारा इसे राष्ट्रीय पर्व घोषित करने हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रपति एवं राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपे गये।

न केवल टिविटर (सोशल मीडिया) पर मातृ-पितृ पूजन दिवस के हेशटेग देश के टॉप ट्रेंड्स में बने रहे बल्कि प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी मातृ-पितृ पूजन दिवस चर्चा का विषय बना रहा।

अमृतबिंदु – पूज्य बापूजी

मीठी और हितकारी वाणी दूसरों को आनंद, शांति एवं प्रेम का दान करती है और स्वयं आनंद, शांति एवं प्रेम को छलकाती है। मधुर सुंदर हितकारी वाणी से सद्भक्तों का पोषण होता है, मन को पवित्र शक्ति प्राप्त होती है हर सुख निर्मल बनती है। ऐसी वाणी में आनन्द का आशीर्वाद उत्तरता है और इससे अपना, दूसरों का - सबका कल्याण होता है।
आपके परिवार की उत्तम स्वास्थ्य के लिए
होमियोपॉथिक औषधि-संग्रह

होमियो फेमिनी केसर गर्भशाय बोधक
यह किसी भी उम्र की महिलाओं में होनेवाले हर प्रकार के स्वेच्छाप्रदर्शक को चुन कर देकर मासिक धर्म का अर्जन करना है।

होमियो एडिक्ट केसर
यह तमाकुक, बिड़ली, सिगरेट और पारंपरिक वातावरण के सदिश दौं का अद्वितीय उत्तम उत्तराधिकारी है।

होमियो लीवर केसर लीवर टॉनिक
यह पीली या कक्षावशिष्ट खाँसी, श्वायं तथा में तकनीकी के साथ हर प्रकार की श्वसन-संबंधी समस्याओं में लाभकारी है।

होमियो कफ केसर कफ सिरप
यह सुखी या कफनी खाँसी, मुख्य तमाकुक के साथ हर प्रकार की मुख्य-संबंधी समस्याओं में लाभकारी है।

यह इंडियन स्थानीय उत्तम स्वास्थ्य की सामग्री के संबंध में प्रतीक का सम्मान करते हैं। अन्य उपयोगों व सरीर के चिकित्सा लाभ.

उपयोग करने के लिए व्यक्ति अपने फॉलोअप से प्राप्तकरण का समुचित कर सकते हैं। अन्य उपयोगों व सरीर के चिकित्सा लाभ.

“आश्रम एस्ट्री” ऐप या विज्ञापन करें: www.ashramestore.com या समर्पण करें: 079 66510270, ई-मेल: contact@ashramestore.com
राष्ट्रीय पर्व घोषित करने हेतु सौंपे गये ञापम

उत्तराखंड के वन व व्यवसाय मंत्री डॉ. श्री हर्ष सिंह रावत भेंटेनारूप यह ऊष्मा प्राप्त करार हुए